वरिष्ठ भारतीय भाषाविदों का सम्मान समारोह

आज का यह अवसर हम सभी के लिए गर्व और हर्ष का क्षण है। हम यहाँ पर एक ऐसे समारोह में एकत्र हुए हैं, जो भाषाओं, संस्कृतियों और विद्वता के सजीव संगम का प्रतीक है। यह सभा उन महानुभावों के प्रति श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु आयोजित की गई है, जिन्होंने भारतीय भाषाओं और उज़्बेकी भाषा के बीच पुल बनाने का महान कार्य किया है। दोनों देशों के मध्य यह आत्मीयता केवल व्यापार, राजनीति और कूटनीति तक सीमित नहीं रही, बल्कि भाषा, साहित्य और कला ने भी इस संबंध को प्रगाढ़ बनाया है। उज़्बेकिस्तानी विद्वानों ने भारतीय भाषाओं के अध्ययन में जो योगदान दिया है, वह इन भाषाओं के वैश्विक विस्तार का प्रमाण है।

क़लम की स्याही से जो रौशन हुए हैं चिराग़,
उनके सामने सूरज की रोशनी भी कम है।

आज का यह विशेष अवसर उन विद्वानों को समर्पित है, जिन्होंने अपनी लगन, परिश्रम और विद्वता के माध्यम से भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और उनके अध्ययन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि उज़्बेकिस्तान के विद्वानों ने हिंदी, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं में गहरी रुचि दिखाई है और उनके अनुवाद, शिक्षण और शोध कार्यों के माध्यम से भारत-उज़्बेकिस्तान के ऐतिहासिक संबंधों को और अधिक सशक्त किया है। विशेष रूप से हिंदी भाषा के प्रति उज़्बेकी भाषाविदों का प्रेम और समर्पण प्रशंसनीय है। उन्होंने केवल भाषा को सीखा ही नहीं, बल्कि उसे अपने विचारों और साहित्य में अभिव्यक्ति भी दी है। उनके अनुवाद कार्यों ने भारतीय साहित्य को उज़्बेकी भाषा में पहुँचाया, जिससे उज़्बेक समाज भारतीय साहित्य की गहराइयों से परिचित हो सका।

दो मुल्क, दो तहज़ीब, मगर दिल है एक,
लफ़्ज़ जुदा हों मगर जज़्बात का मर्म एक।

हम सभी को मिलकर यह प्रयास करना होगा कि भारतीय भाषाएँ और उज़्बेकी भाषा एक-दूसरे के साहित्य, संस्कृति और इतिहास से और अधिक समृद्ध हों। इसके बारे में हम और चर्चा कर सकते हैं –

1. अनुवाद कार्यों का विस्तार: भारतीय भाषाओं के प्रमुख ग्रंथों और साहित्यिक कृतियों का उज़्बेकी भाषा में अनुवाद किया जाए, जिससे वहाँ के लोग भारतीय संस्कृति से और अधिक परिचित हो सकें।

2. भाषा शिक्षण केंद्रों की स्थापना: उज़्बेकिस्तान में भारतीय भाषाओं को सिखाने हेतु भाषा शिक्षण केंद्र खोले जाएँ, जिससे अधिक से अधिक लोग हिंदी, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं को सीख सकें।

3. साझा शोध परियोजनाएँ: भारत और उज़्बेकिस्तान के विश्वविद्यालयों के बीच भाषा, साहित्य और संस्कृति पर आधारित संयुक्त शोध परियोजनाएँ प्रारंभ की जाएँ।

4. डिजिटल माध्यमों का उपयोग: ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, ई-पुस्तकों और डिजिटल अनुवाद परियोजनाओं को बढ़ावा देकर भाषा शिक्षण को सरल बनाया जाए।

5. अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन : भारत और उज़्बेकिस्तान के बीच भाषायी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए नियमित रूप से अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया जाए, जहाँ विद्वान अपने शोध, विचार और अनुभव साझा कर सकें। इससे भाषायी अध्ययन और सांस्कृतिक समझ को और अधिक गहराई मिलेगी।

6. हिन्दी पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन : उज़्बेकिस्तान में हिंदी भाषा में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाए, जिससे वहाँ के हिंदी शिक्षार्थी और विद्वान भारतीय साहित्य और समाचारों से जुड़े रह सकें। यह न केवल भाषा को लोकप्रिय बनाएगा, बल्कि दोनों देशों के संबंधों को और भी मजबूत करेगा।

आज हम जिन विद्वानों का सम्मान कर रहे हैं, वे न केवल भाषाविद हैं, बल्कि वे भारत-उज़्बेकिस्तान के सांस्कृतिक राजदूत भी हैं। उन्होंने भाषा के माध्यम से दो देशों के हृदयों को जोड़ा है। मैं पुनः अपने हृदय की गहराइयों से इन सभी सम्माननीय विद्वानों को नमन करती हूँ और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। यह कार्यक्रम केवल एक औपचारिक सम्मान समारोह नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक अवसर है, जो हमें *यह स्मरण कराता है कि भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि हृदयों को जोड़ने वाली अमूल्य कड़ी है।*

अंत में, मैं पुनः सभी अतिथियों, विद्वानों और भाषा प्रेमियों का धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने इस समारोह को गरिमा प्रदान की। हमें विश्वास है कि इस प्रयास से भारत और उज़्बेकिस्तान के बीच भाषायी और सांस्कृतिक संबंध और अधिक प्रगाढ़ होंगे।

धन्यवाद! जय हिंद!

****